REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

बिहार एवं पर्यटन उद्योग की असीम संभावनाएँ : एक अध्ययन

राजेश कुमार
बी० कॉम०, एम० कॉम०,
शोध छात्र , ल0 ना0 मि0 विश्वद्यिालय, दरभंगा.

भूमिका

जनसंख्या की दृष्टि से बिहार भारत का दुसरा बड़ा राज्य है और भौगोलिक दृष्टि से बारहवां बड़ा राज्य का यह नाम 'विहारा' से लिया गया है जिसका अर्थ होता है 'मठ'। बिहार पर्यटन प्राचीन सभ्यता, धर्म, इतिहास और संस्कृति का अनूठा मेल है, जो भारत की पहचान है। यह राज्य भारत के कुछ महान साम्राज्यों जैसे मौर्य, गुप्त और पलस के उदय और उनके पतन का गवाह रहा है। 5वीं से 11वीं सदी के बीच यहां विश्व का प्रारंभिक विश्वविद्यालय विकसित हुआ। उसके अवशेष आज भी बिहार पर्यटन के आकर्षणों में से एक हैं। बौद्ध धर्म के कुछ पवित्र स्थल भी इस राज्य में हैं। हिंदू धर्म, सिख धर्म और जैन धर्म के कुछ महत्वपूर्ण स्थान भी यहां हैं। यह राज्य अपने देशी अंदाज के लिए दुनिया भर में मशहूर है। यहाँ की बोलचाल एवं संस्कृति की पूरे देश में एक अलग पहचान है।

प्राचीन काल में बिहार राज्य बौद्ध एवं हिन्दू धर्म के लोगों का प्रमुख धार्मिक स्थल था। वर्तमान में भी बिहार में कई ऐसे धार्मिक स्थल मौजूद है जिनकी काफी मान्यता है। बिहार राज्य को बौद्ध धर्म के प्रतिस्थापक महावीर की जन्मस्थली के रूप में भी जाना जाता है। साथ ही इनका निर्माण भी इस राज्य में हुआ था। बिहार पर्यटन स्थलों, ऐतिहासिक धरोहरों, धर्म, अध्यात्म और संस्कृति का केन्द्र रहा है। यहाँ की परम्पराएं, संस्कृति, रीति–रिवाज और जीवन–पद्धतियां, मेले, पर्व, त्योहार हमेशा से पर्यटकों को आकर्षित करते रहे हैं। यह एक ऐसा राज्य है जिसने दूनिया को दो धर्म दिए–बौद्ध धर्म और जैन धर्म। यहां आकर पर्यटकों को दो धर्मों को मेल तो देखने को मिलता ही है साथ ही यहां की संस्कृति भी सभी को अपनी ओर आकर्षित करती है।

यातायात

- बिहार में दो अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं, एक बिहार की राजधानी पटना में स्थित है, एवं दूसरा गया शहर में। यहाँ से देश विदेश के लिए फ्लाइट्स का आवागमन होता है। इसके अलावा बिहार राज्य में कई घेरलू हवाई अड्डे हैं, जहाँ से देश के विभिन्न हिस्सों से फ्लाइट्स का आवागमन होता है।
- बिहार राज्य में रेलवे की बहुत अच्छी सुविधा उपलब्ध है। देश के लगभग हर हिस्से से बिहार राज्य के लिए ट्रेनें चलती हैं।
- बिहार राज्य में सड़क परिवहन की भी अच्छी सुविधा उपलब्ध है।

बिहार राज्य, पश्चिम में उत्तर प्रदेश, उत्तर में नेपाल, पूर्व में पश्चिम बंगाल का उत्तरी भाग और दक्षिण में झारखंड की सीमाओं से लगा हुआ है। बिहार पर्यटन–झील, झरने और हॉट स्प्रिंग्स के रूप में प्राकृतिक सुंदरता के क्षेत्र प्रदान करता है। प्राचीनकाल के क्लासिक भारत में प्राचीन बिहार ताकत, शिक्षा और संस्कृति का केंद्र था।

बिहार की यात्रा करने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च है जब यहाँ मौसम सुहावना रहता है। भारत के पूर्वी हिस्से में स्थित बिहार के चारों ओर धरती है जिससे बिहार के किसी भी राज्य में आना जाना सुविधाजनक है। बिहार भारत के बाकी हिस्सों से रेल, हवाई और सड़क मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है।

बिहार के मुख्य पर्यटन स्थल :

विश्वशांति स्तूप बिहार का एक बहुत ही नामी ऐतिहासिक स्थल है। भारत में 7 शांति स्तूप है जिसमें से विश्वशांति स्तूप एक है। 1969 में इस स्तूप का निर्माण हुआ था, जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों के बीच शांति और अहिंसा फैलाना था।

नालंदा से 15 किमी. दूर स्थित राजगीर, मंदिरों और मठों से भरी जगह है। यह एक घाटी में बसी जगह है और इसके आसपास के स्थान बहुत सुंदर हैं।

- **गया**

बिहार में धर्म नगरी से प्रसिद्ध गया बिहार के दूसरे सबसे बड़े शहर का नाम है। खासतौर पर इस शहर में सबसे ज्यादा विष्णु मंदिर का बहुत बड़ा महत्व है। बताया जाता है इस मंदिर में भगवान विष्णु के पांव हैं। फाल्गुन नदी के तट पर बसे इस शहर में लोग पिंड दान करने आते हैं। हिंदू धर्म के अनुसार ऐसा करने से मरने वाले व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। इसके अलावा यह स्थान पर्यटन के लिए मशहूर है। कहा जाता है भगवान बुद्ध यहां लंबे समय तक रूके रहे, जिस वजह से इसका नाम बोध गया रखा गया।

1865 में गया की स्थापना की गई थी और इसे एक आजाद जिला का दर्जा दिया गया था। गया हिंदू धर्म का हब है और बौद्ध का भी तीर्थस्थल है। यह माना जाता है कि यहां एक पेड़ है जिसके नीचे बैठकर बुद्ध ज्ञान प्राप्त करते थे। गया एक बहुत ही भीड़–भाड़ वाला स्थान है जो फालगु नदी के किनारे बसा हुआ है।

- **नालंदा विश्वविद्यालय**

सबसे पहले आपको रूबरू करवाते हैं बिहार में स्थित नालंदा विश्वविद्यालय से जहां प्राचीन समय में लोग दूर–दूर से शिक्षा ग्रहण करने आते थे। बता दें, इसकी स्थापना गुप्त वंश के शासक कुमार गुप्त द्वारा कि गई थी। इसके अलावा यही वो जगह है जहां सम्राट अशोक ने सबसे ज्यादा मठ और मंदिरों का निर्माण करवाया था। इसकी इमारत में खास बात यह देखने को मिलती है कि इसे लाल पत्थर से बनवाया गया है जिसे देखने के लिए लोग देश विदेश से आते हैं। लागों की मानें तो महात्मा बुद्ध भी यहां शिक्षा लेने आते थे।

- **राजगृह**

राजगृह को बिहार की ऐतिहासिक और धार्मिक नगरी के रूप में पहचाना जाता है। आपको बता दें, वक्त के साथ राजगृह का नाम राजगीर के नाम में बदल गया। यहां कि हरियाली और प्राकृतिक खूबसूरती लागों को अपने तरफ आकर्षित करती है। तो वहीं हिन्दु और बोध धर्म के लोग यहां आकर खुद को धन्य मानते हैं। खास बात यह है कि यहां एक गर्म कुंड भी मौजूद हैं जहां स्नान करने के बाद लोग खुद को पवित्र समझते हैं। नालंदा से 15 किमी. दूर स्थित राजगीर, मंदिरों और मठों से भरी जगह है। यह एक घाटी में बसी जगह है और इसके आसपास के स्थान बहुत सुंदर हैं। आसपास के जंगल राजगीर की सुंदरता को और बढ़ाते हैं।

- **कांवर झील**

कांवर झील भारत का सबसे बड़ा फ्रेशवाटर लेक है। यहां पक्षियों कि लगभग 60 प्रजातियां हैं। यह देखने में बहुत ही खूबसूरत है। इसे देखने के लिए पर्यटक यहां आते हैं।

- **मुछालिंदा लेक**

मान्यता है कि एक बहुत बड़े तूफान से शेष नाग ने बुद्ध भगवान को बचाया था, उस समय इस लेक का यह रखा गया था। मुछालिंदा ने बढ़ती लहरों से बुद्ध की रक्षा की थी। यहां आपको एक ऐसी मूर्ति भी देखने को मिलेगी जो यहां के इतिहास को बयां करती है।

- **अहिरोली**

बिहार के बक्सर शहर के केंद्र से 5 किमी दूर स्थित एक छोटा सा गांव अहिरोली है। यहां देवी अहिल्या का एक मंदिर है। पौराणिक कथा के अनुसार देवी अहिल्या गौतम ऋषि की पत्नी थीं। रामायण के अनुसार देवी अहिल्या ने गलती से एक बार अपने पति का भेष धरकर आए एक व्यक्ति को अपना पति समझ लिया। इससे गौतम ऋषि बहुत क्रोधित हुए और देवी अहिल्या को मानव से पत्थर बना दिया। बक्सर के अहिरोली गांव का यह मंदिर लोगों को देवी अहिल्या के निरअपराध होने की याद दिलाता है। कई सालों बाद उस क्षेत्र से गुजरते हुए भगवान राम ने देवी अहिल्या को देखा और उसे मुक्त किया। भगवान राम के छूते ही पत्थर बनी देवी अहिल्या वापस मानव बन गई। बक्सर का यह अहिरोली गांव लोगों के लिए एक तीर्थ स्थल है। लोग यहां दूर दूर से अपने जाने अनजाने में हुए पापों से मुक्ति पाने आते हैं।

- **जलमंदिर, पावापुर**

यह एक जैन तीर्थ स्थल है, जो बिहार के पावापुरी में स्थित है। यह मंदिर लेक के बिल्कुल बीचों–बीच है और यह कमल के फूलों से भरा हुआ है। यह माना जाता है कि इस मंदिर को नंदीवरधान ने बनवाया है, जो महवीर के बड़े भाई थे। यह मंदिर विमान के आकार में बनवाया गया है।

- **वाल्मीकि नगर**

वाल्मीकि नगर में रामायण के रचियता महर्षि वाल्मीकि के नाम पर वाल्मीकि आश्रम स्थित है। वाल्मीकि का नाम पहले रत्नाकर था, जो लोगों से सामान छीनकर अपना जीवन यापन करते थे। बाद में उन्हें पछतावा हुआ और उन्होंने प्रायाश्चित उन्हें भगवान के जीवन को संकलित करने का आशीर्वाद मिला।

- **हसनपुरा**

बिहार का हसनपुरा गांव, धनाई नदी के किनारे सिवान से दक्षिण में 21 किमी दूर स्थित है। यह जगह अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है लेकिन इसकी प्राकृतिक सुंदरता भी कुछ कम नहीं है। अरब के किसी दूर देशों से एक संत मखदमू सैयद हसन चिश्ती भारत आए थे। वह भारत के लोगों और संस्कृति से इतना प्रभावित हुए कि अपने देश वापस ना जाने का फैसला कर लिया। उन्होंने ही हसनपुरा गांव की स्थापना की।

मखदमू सैयद हसन चिश्ती यहां लंबे समय तक रहे। उनका रुझान धर्म और आत्मा की पवित्रता की ओर था। वह बिहार के हसनपुर में धार्मिक संस्था खानकाह के संस्थापक थे।

- **चंपारण**

चंपारण बिहार का एक प्रसिद्ध स्थान है जिसका भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में बहुत महत्व है। यह वह स्थान है जहां महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आंदोलन की संरचना का पहला प्रयास किया था। यह जगह प्रसिद्ध चंपारण आंदोलन के लिए जानी जाती है जो बिहार और देश के अन्य हिस्से में नील खेती करने वाले किसानों पर होने वाले अत्याचार के विरोध में शुरू हुआ था। इस आंदोलन का प्रभाव काफी लंबे समय तक रहा था। चंपारण के अच्छे दिन लाने के लिए महात्मा गांधी अपने प्रयासों में दृढ़ थे। आखिरकार ब्रिटिश सरकार को जांच कमेटी बनानी पड़ी। कमेटी को चंपारण के किसानों की स्थिति की जांच करने और रिपोर्ट देने की जिम्मेदारी दी गई।

- **वैशाली**

वैशाली बिहार राज्य का एक ऐसा शहर है जिसका नाम महाभारत काल के राजा विशाल के नाम पर रखा गया था। यहां घूमने के लिए सबसे अच्छा मौसम जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल का माना जाता है। इस छोटे से गांव में लोग सम्राट अशोक द्वारा बनाए गए स्तंभ और स्तूपों को देखन के लिए आते हैं। बता दें यहां का विशाल शांति स्तूप पूरे विश्व में विख्यात है। कहा जाता है भगवान बुद्ध यहां पर लंबे समय तक रूके थे। यहां एक स्थान ऐसा भी है जहां भगवान बुद्ध बारिश के मौसम का आनंद उठाया करते थे। इसके अलावा वैशाली में एक ऐसा झील है जिसके पानी को प्राचीन समय में पवित्र माना जाता था। [5] हालांकि आज यहां आने वाले लोग इस पानी को दूर से ही प्रणाम करके चले जाते हैं।

- **मुंगेर**

बिहार में स्थित मुंगेर को ऐतिहासिक नगरी कहा जाता है। यहां आज भी पहले के बने हुए पुराने जमाने के किले मौजूद हैं। इन किलों को देखने के लिए दूर–दूर से लोग आते हैं। यह शहर गंगा नदी के किनारे बसा हुआ है। यहां दिखाई देने वाली पहाड़ियों के ऊपर कई भव्य किले बने हुए हैं जो इस शहर की खूबसूरती में चार–चांद लगाती है। यहां आकर अगर आप प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेना चाहते हैं तो आप यहां की कृष्ण वाटिका सबसे अच्छी जगह है। इस वाटिका के अंदर दो लंबी सुरंग हैं जिन्हें प्राचीन समय में बनाया गया था।

- **प्रेतशिला पर्वत**

बिहार के गया का प्रेतशिला पर्वत पटना से दक्षिण में 100 किमी. दूर स्थित है। इस प्राचीन शहर का हिंदुओं और बौद्ध धर्म के लोगों के लिए बहुत महत्व है। गया का प्रेतशिला पर्वत फाल्गु नदी के पास स्थित है। इस नदी की यह विशेषता है कि इसका पानी उपर से दिखाई नहीं देता। इसका पानी कीचड़ और रेत की मोटी परत के नीचे रहता है। गया जाने वाले लोग गड्ढा खोदकर इसका पानी निकालते हैं।

- **महाबोधि मंदिर**

महाबोधि मंदिर बिहार राज्य का एक प्रसिद्ध बौद्ध मंदिर है, जो बिहार के गया शहर में स्थित है। इस मंदिर के संदर्भ में यह मान्यता है कि यहाँ पर गौतम बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यह मंदिर बौद्ध धर्म का एक प्रमुख धार्मिक स्थल है।

यह मंदिर बिहार राज्य के गया शहर में स्थित है। गया रेलवे स्टेशन से इस मंदिर की दूरी 17 किमी है। यहाँ पहुँचने के लिए टैक्सी की सुविधा उपलब्ध है।
यहाँ घूमने में 1 से 2 घंटे का समय लग जाता है।

- **महावीर मंदिर**

महावीर मंदिर हिंदुओं के प्रमुख मंदिरों में से एक है जो भगवान हनुमानजी को समर्पित है। यहाँ बड़ी मात्रा में श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। रामनवमी के पावन अवसर पर यहाँ पर भक्तों की कतार लग जाती है।

- **पाटन देवी**

यह मंदिर बिहार के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है, जो बिहार की राजधानी पटना के पटना सीटी में स्थित है। यह अत्यंत प्राचीन देवी मंदिर है।

बिहार का सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, बौद्धिक, कलात्मक, प्राकृतिक सौंदर्य अनुपम है।

बिहार और पर्यटन उद्योग :

बिहार को दुनिया का प्रथम लोकतंत्र होने का गौरव प्राप्त है। वैशाली जो दुनिया का प्रथम लोकतंत्र था बिहार में ही है। बिहार जहाँ महान गणितज्ञ आर्यभट्ट, शेरशाह, कुवँर सिंह जैसे महान विभूतियों का जनक रहा है वहीं भारतवर्ष को सदियों की गुलामी से आजादी दिलाने वाले स्व० महात्मा गांधी (बापू) का कर्मभूमि (चम्पारण) भी रहा है। यहीं महान सम्राट अशोक की धर्मध्वजा लहराया है। यहीं के गुरू गोविंद की वाणी ने

दुनियां को राह दिखाया है। यहीं से भगवान बुद्ध के बोद्धिसत्व के करूणा की रसधार बही है। यहीं इसी बिहार से भगवान महावीर का शांति मंत्र निकला है। बिहार से ही नालंदा, तक्षशीला जैसे ज्ञानदीप का ज्योति भी निकला है। यह बाल्मिकी , कालिदास, विद्यापति, उदयनाचार्य, मंडनमिश्र, आयाची, वाचस्पति ठाकुर, बाबा नागार्जुन, लोकनायक जय प्रकाश नारायण, राजेन्द्र प्रसाद, कर्पूरी ठाकुर जैसे कर्मबांकुरों की धरती है। बिहार पर्यटन के लिए आज से नहीं बल्कि प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध रहा है। [7]

बिहार मे पर्यटन उद्योग की असीम संभावनाएँ है। पर्यटन के लिहाज से बिहार में दुनिया के अन्य राज्यों से अधिक संभावनाएँ है। यहाँ पाँच धर्मो का संगम है। हाल ही में बिहार सरकार द्वारा बिहार को पर्यटन के 12 (बारह) सर्किटों में बांटकर विकसीत बनाने पर विचार की है।

1. हिन्दु सर्किट
2. सिख सर्किट
3. बुद्ध सर्किट
4. जैन सर्किट
5. सूफी सर्किट
6. नालंदा.बिहार सर्किट
7. शिव शक्ति सर्किट
8. गांधी सर्किट
9. पक्षी विहार सर्किट
10. वन सर्किट
11. जल सर्किट
12. सांस्कृतिक, कलात्मक एवं लोकगाथा सर्किट।

बिहार सरकार पर्यटन विभाग के वर्षवार पर्यटक आँकड़े बताते हैं कि बिहार में देशी एवं विदेशी पर्यटकों के आने में लगातार वृद्धि हो रही है। इसे निम्न आँकड़ों से देखा जा सकता हैं :

तालिका –1

(

वर्ष	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक
2005	68,80,685	63,321
2006	1,06,70,268	94,446
2007	1,03,52,887	1,77,362
2008	1,18,89,611	3,45,572
2009	1,57,84,679	4,23,042
2010	1,6042,725	5,40,686
2011	1,83,97,490	9,27,487
2012	2,14,47,099	10,96,933
2013	2,15,88,306	7,65,835
2014	2,25,44,377	8,29,508
2015	2,80,29,118	9,23,737
2016	2,85,16,127	10,10,531
2017	3,24,14,063	10,82,705
2018	3,36,21,613	10,87,971

स्त्रोत : www.bihartourism.gov.in/data.htm)

बिहार में प्रतिवर्ष होने वाले पर्यटकों की वृद्धि से वार्षिक आय में भी वृद्धि होती है। कुछ वर्षो के लाभ के आँकड़े निम्नवत है।

तालिका –2

क्रम संख्या	वर्ष	आय (रुपये में)	व्यय(रुपये में)	लाभ (रुपये में)
1	2011–12	10,51,04,850	8,32,75,338	2,18,29,512
2	2012–13	10,99,87,796	9,35,48,761	1,64,39,035
3	2013–14	13,74,59,573	11,71,30,477	2,03,29,096
4	2014–15	17,25,55,774	11,56,058	5,69,06,771
5	2015–16	16,41,53,583	10,96,81,326	5,44,72,256
6	2017–18	19,02,37,423	11,78,76,213	6,01,64,396

(स्त्रोत : www.bihartourism.gov.in/data.htm)

तालिका –3

कुल प्रदत पूँजी (अंकेक्षण लेखा 2014–15)	5 करोड़
टर्न ओवर	17.18 करोड़
कुल व्यय	11.90 करोड़
रिजर्व एवं सरपल्स	25.22 करोड़
शुद्ध स्थायी संपति (ह्रासोपरांत)	07.03 करोड़
शुद्ध चालू संपति	98.25 करोड़
लाभ (कर से पहले)	05.30 करोड़
लाभ (कर के बाद)	03.50 करोड़

स्त्रोत (पर्यटन विभाग, वार्षिक प्रतिवेदन 2017–2018)

सेक्टर वाईज फिनानसियल 2016–2017

तालिका –4

क्रम सं	सेक्टर	बिक्री (करोड़ में)	व्यय (करोड़ में)	लाभ (करोड़ में)
1	होटल्स	1.87	1.15	0.72
2	रेस्टुरेन्ट	0.20	0.16	0.04
3	ट्रांसपोर्ट	2.57	2.11	0.46
4	रोप वे	2.51	0.34	2.17

(स्त्रोत – पर्यटन विभाग, वार्षिक प्रतिवेदन 2017–2018)

बिहार की इतनी महान पावन भूमि, बुद्ध और महावीर के ज्ञान अहिंसा दर्शन की भूमि, शेरशाह सूरी और बाबू कुंवर सिंह की शौर्य भूमि, आजादी की लड़ाई में महात्मा गाँधी की कर्मभूमि, जयप्रकाश नारायण की क्रांति भूमि, गरीबों के पास में उग्र वामपंथ की प्रयोग भूमि, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासतों का धनी बिहार के कुछ प्रमुख बिन्दुओं को शोध के दृष्टिकोण से उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है।

पर्यटन उद्योग के विकास की बिहार में अपार संभावनाएँ

पर्यटन उद्योग के विकास की बिहार में अपार संभावनाएँ है। बिहार में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक पर्यटन स्थलों की भरमार है। नालंदा विश्वविद्यालय, बुद्ध और महावीर के ज्ञान व अहिंसादर्शन के केंद्र बोधगया और पावापुरी, मिथिला में विद्यापति के सुमधुर गीतों की विरासत, भिखारी ठाकुर की सांस्कृतिक विरासत, फणीश्वरनाथ रेणु की संवेदनशीलता और आम आदमी के प्रति बाबा नागार्जुन का विश्वास आदि की शानदार परंपराओं के अलावा उत्तर मे सोमेश्वर पहाड़ो से लेकर दक्षिण बिहार तक कुदरती सौंदर्य का भंडार है। यहां पर्यटन का पूरा विकास हो सकता है।

- **कला संस्कृति** : बिहार की संस्कृति मगध, अंग, मिथिला और वज्जि संस्कृतियों का समागम है। मीठी बोली और आतिथ्य सत्कार के लिये यहां के लोग जाने जाते है। मिथिला पेंटिंग, सींकी कला और टेराकोटा जैसी कलाएं यहां के गांव.गांव में जीवंत है। बिहार में लोकगीतों की समृद्ध परंपरा रही है। शादी.ब्याह, पर्व.त्योहारों और सामाजिक आयोजनों में इन्हें गाया जाता है। [12]
- **प्रमुख पर्व त्योहार** : छठ पूजा, सामा.चकेबा, रामनवमी, बिहुला, मकरसंक्रांति, मधुश्रावणी आदि।
- **भाषाएँ** : हिंदी और उर्दू के अलावा अंगिका, भोजपूरी, मगही, मैथिली और वज्जिका यहां की प्रमुख भाषायें है।
- **जायका खांटी बिहारी** : अनरसा, खाजा, मोतीचुर के लड्डू, तिलकुट सत्तू, चुड़ा.दही, लिट्टी.चोखा, भूंजा, कचरी, लहसुन की चटनी, पुआ, दूध पूआ, पिट्ठा, पूड़ी.जलेबी, के अलावे चंपारण के तास जैसे कई मांसाहारी व्यंजन बिहार के खानपान को विविधतापूर्ण और समृद्ध बनाते हैं।

14 नवम्बर 2000 ई० को बिहार झारखंड बँटवारा के बाद बिहार की खनिज संपदा से युक्त क्षेत्र झारखंड के हिस्से में चला गया है। बिहार के दक्षिण भाग बौद्ध क्षेत्र बोध गया, राजगीर, नालंदा, अरेराज, वैशाली, केसरिया में बौद्ध पर्यटकों का आना बदस्तुर जारी है।

हालांकि बौद्ध धर्म का बिहार से बेहद पुराना रिस्ता है लेकिन मिथिला क्षेत्र के इस अनुपम पर्यटन संसाधनों को पर्यटन उद्योग के रूप में सरलता से विकसित कर राष्ट्र व क्षेत्र को विकसित बनाने का एहसास बहुत देर से हुआ है। मिथिलांचल (दरभंगा प्रमंडल) के पर्यटनीय संसाधनों को विकसित कर दुनियाभर के पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। बिहार के दक्षिण भागों की तरह मिथिला में भी पर्यटन उद्योग की असीम संभावनाएँ है।

बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री **श्री नीतीश कुमार द्वारा** पर्यटन के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के फलस्वरूप बिहार में विश्व–व्यापी मंदी के बावजूद भी देशी एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या में उतरोत्तर वृद्धि हो रही है। (स्त्रोतः– बिहार सरकार पर्यटन विभाग 2015–16) [13]

साल 2015, बिहार में कुल 5844209 पर्यटक आए जिनमें कुल 64114 विदेशी पर्यटक है। साल 2016 मे बिहार में 4.23 लाख विदेशी पहुंचे थे। वर्ष 2016 तथा 2017 में क्रमशः 6.360 लाख तथा 9.720 लाख विदेशी पहुँचे।

भारत की बहुसांस्कृतिक और बहुपारंपरिक समाज विन्यास तथा यहाँ की उच्च स्तरीय वास्तु विरासत के चलते यहाँ प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में विदेशी पर्यटक आते हैं। ऐसे में पर्यटन विभाग को इसके लिए खासा इंतजाम करना पड़ता है। ताकि ज्यादा से ज्यादा विदेशी सैलानी यहाँ आ सकें । भारत में दिसम्बर 2012 में पर्यटकों की संख्या में 4.3% की वृद्धि रही और 65.78 लाख विदेशी पर्यटक भारत आये । दिसम्बर 2012 के मुकाबले दिसम्बर 2015 में 6.3% की वृद्धि हुई। दिसम्बर 2011 में 7.37 लााख, दिसम्बर 2014 में 7.35 लाख और दिसम्बर 13 में 08 लाख विदेशी पर्यटकों का आगमन हुआ । 68.48 लाख विदेशी पर्यटक आये जनवरी से दिसम्बर 2015 के बीच और विदेशी पर्यटकों के आगमन में 4.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। वर्ष 2016–2017 के बजट में टूरिज्म सेक्टर को लेकर कई घोषणाएँ हुई है। इन घोषणाओं को देखकर लगता है कि टूरिज्म सेक्टर के अच्छे दिनों की शुरूआत हो रही है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 1000 करोड़ रुपये से अधिक के प्रस्ताव के साथ–साथ सारनाथ, गया, वाराणसी, बौद्ध सर्किट का विकास, देश के नौ हवाई अड्डों पर ई–वीजा की सुविधा, ''ह्रदय'' और ''प्रसाद'' जैसी योजनाओं की शुरूआत हो रही है।

घरेलु स्तर पर पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए काफि कुछ प्रयास हो रहे हैं। मिथिलांचल के पर्यटन केन्द्र अपनी सांस्कृतिक विरासत एवं उच्च स्तरीय वास्तु शिल्प विरासत से पर्यटकों को आकृषित करने के लिए तैयार बैठी है। राज्य सरकार द्वारा भी विभिन्न पर्यटनीय स्थानों के साथ साथ मिथिला के पर्यटन केन्द्रों को विकसित करने के लिए तत्पर हैं। वर्ष 2016–17 में 38 पर्यटन स्थलों के सौंदर्यीकरण पर 111.04 करोड़ रुपये खर्च हो रहे हैं। पर्यटन विभाग द्वारा नालंदा, गया, जहानाबाद, पटना, वैशाली, सारण, नवादा, बोधगया, समस्तीपुर, मधुबनी, कटिहार, बाँका और आरा के 33 पर्यटक स्थलों के सौंदर्यीकरण का काम शुरू हुआ है। देशी–विदेशी पर्यटक बिहार आते ही बोधगया और वैशाली, नालंदा घूमना पसंद करते हैं। पर्यटन विभाग ने तीन जिलों को पर्यटन स्थलों के सौंदर्यीकरण व विकास का काम कराने को अपनी प्राथमिकता सूची में रखी है।

निष्कर्ष :

बिहार एवं बिहार के पर्यटन उद्योग की विभिन्न विकासात्मक एवं वाणिज्यिक गतिविधियों के आँकड़े बिहार सरकार पर्यटन विभाग के उपलब्ध स्त्रोतो से यह स्पष्ट है कि वर्तमान परिदृश्य में पर्यटन का जो ट्रेंड उभरकर सामने आया है वह नित्य प्रति बढोतरी के प्रति उन्मुख है।

बिहार के दक्षिणी क्षेत्रों यथा नालंदा, गया, अरेराज, वैशाली, सारण, नवादा आदि क्षेत्रों की भाँति मिथिला का दरभंगा प्रमंडल के विभिन्न पर्यटन स्थलों कुशेश्वर स्थान, उगनेश्वर स्थान, कपिलेश्वर स्थान, बिदेश्वर स्थान, अहिल्यास्थान, गौतमस्थान, दरभंगा राज, श्यामा माई मंदिर, माधवेश्वर प्राँगन, कमलाधार, राज नगर पैलेस, खुदनेश्वर स्थान, विद्यापति डीह सहित विभिन्न ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्थानों में पर्यटकों की संख्या व सुविधाओं में लगातार वृद्धि हो रही है।

अतः मिथिलांचल के पर्यटन स्थलों को स्तरानुरूप विकसित होने से दरभंगा प्रमंडल सहित बिहार के अर्थव्यवस्था में सकारात्मक सहयोग प्रदान किया जा सकता है।

संदर्भ स्त्रोत :

1. शिवकुमार, रा०, (2007), भारत में पर्यटन की सम्भावना, भारतीय अर्थव्यवस्था Vol.2, पृ०–43
2. चंदा, वि० मा०, (2008), पर्यटनः पुरानी समस्या तथा नई आशा, आर्दश प्रकाशन, नई दिल्ली पृ०–144
3. दीक्षित, पी० एन०, (2005), वैश्विकरण के दौर में पर्यटन की समस्याः आशिष प्रकाशन, नई दिल्ली पृ०–210
4. मणिपद्यम, मिथिलाक लोक संघर्ष, साहित्य संस्कृति, मिथिला समाद, कोलकाता रविवार, 07 नवम्बर 2010, पृष्ठ सं० – 05
5. ठाकुर डॉ० उपेन्द्र, हिस्ट्री ऑफ मिथिला, पृष्ठ सं० – 03
6. पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ ऐनिशिएन्ट इंडिया, 5 पृष्ठ सं० – 44
7. शर्मा. डॉ० राम प्रकाश, मिथिला का इतिहास, प्रागैतिहासिक युग पृष्ठ सं०– 07

8- www.bihartourism.gov.org
9- www.bihartourismreport.gov.in
10- www.bihartorda.hu
11- www.bstdc.bih.nic.in
12- www.bihartourism.org
13- tourism.gov.in
14- Labour Resource Department GOB
15- Bihar Revenue Account – Receipts GOB